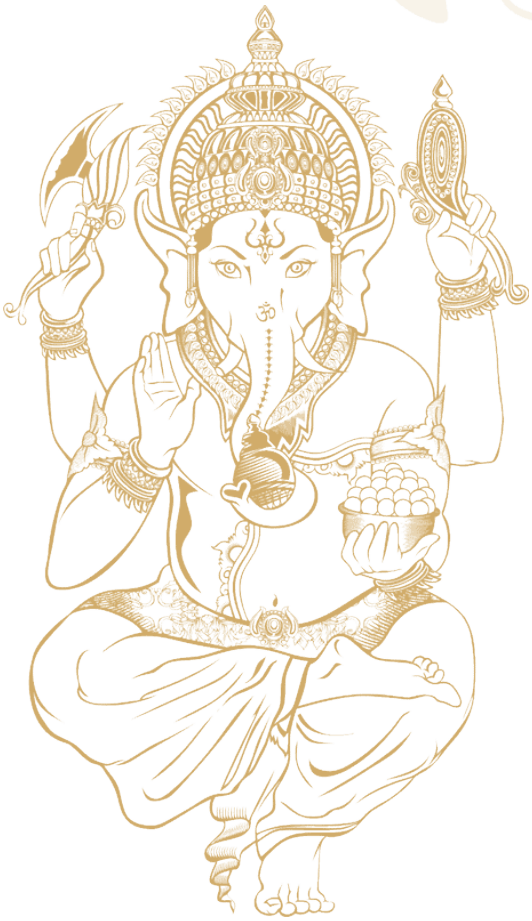

Mr. Sonu kumar

Ms.khushi

Model: Horoscope-Matching

Order No: 120121801

Model: Horoscope-Matching

Order No: 120121801 Date: 12/11/2025

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
29/09/1997	जन्म तिथि	18/09/2004
सोमवार	दिन	शनिवार
घंटे 22:00:00	जन्म समय	11:15:00 घंटे
घटी 40:50:43	जन्म समय(घटी)	14:07:00 घटी
India	देश	India
Ranchi	स्थान	Gaya
23:22:00 उत्तर	अक्षांश	24:48:00 उत्तर
85:20:00 पूर्व	रेखांश	85:00:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:11:20	स्थानिक संस्कार	00:10:00 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:39:42	सूर्योदय	05:37:16
17:38:01	सूर्यास्त	17:50:27
23:49:28	चित्रपक्षीय अयनांश	23:55:13
वृष	लग्न	वृश्चिक
शुक्र	लग्न लग्नाधिपति	मंगल
सिंह	राशि	तुला
सूर्य	राशि-स्वामी	शुक्र
पू०फाल्गुनी	नक्षत्र	स्वाति
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	राहु
3	चरण	4
शुभ	योग	वैधृति
विष्टि	करण	विष्टि
टी-टीकम	जन्म नामाक्षर	ता-तनुजा
तुला	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कन्या
क्षत्रिय	वर्ण	शूद्र
वनचर	वश्य	मानव
मूषक	योनि	महिष
मनुष्य	गण	देव
मध्य	नाड़ी	अन्त्य
श्वान	वर्ग	सर्प

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 8वर्ष 7मा 7दि		28:49:18	वृष	लग्न	वृश्चि	15:46:05	राहु 3वर्ष 10मा 12दि	
मंगल		12:44:13	कन्या	सूर्य	कन्या	01:43:53	शनि	
08/05/2022		20:55:53	सिंह	चंद्र	तुला	17:08:07	31/07/2024	
07/05/2029		06:42:12	वृश्चि	मंगल	कन्या	00:49:52	01/08/2043	
मंगल	04/10/2022	01:36:34	कन्या	बुध	सिंह	17:24:23	शनि	04/08/2027
राहु	22/10/2023	18:23:19	मक व	गुरु	कन्या	04:35:15	बुध	13/04/2030
गुरु	27/09/2024	26:24:37	तुला	शुक्र	कर्क	18:27:42	केतु	23/05/2031
शनि	06/11/2025	23:54:16	मीन व	शनि	कर्क	01:07:44	शुक्र	23/07/2034
बुध	03/11/2026	25:57:26	सिंह	राहु	मेष	08:36:54	सूर्य	05/07/2035
केतु	01/04/2027	25:57:26	कुंभ	केतु	तुला	08:36:54	चन्द्र	02/02/2037
शुक्र	31/05/2028	11:00:09	मक व	हर्ष व	कुंभ	10:03:52	मंगल	14/03/2038
सूर्य	06/10/2028	03:22:49	मक व	नेप व	मक	19:01:57	राहु	18/01/2041
चन्द्र	07/05/2029	09:36:49	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	25:42:55	गुरु	01/08/2043

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:49:28 चित्रपक्षीय अयनांश 23:55:13

लग्न-चलित

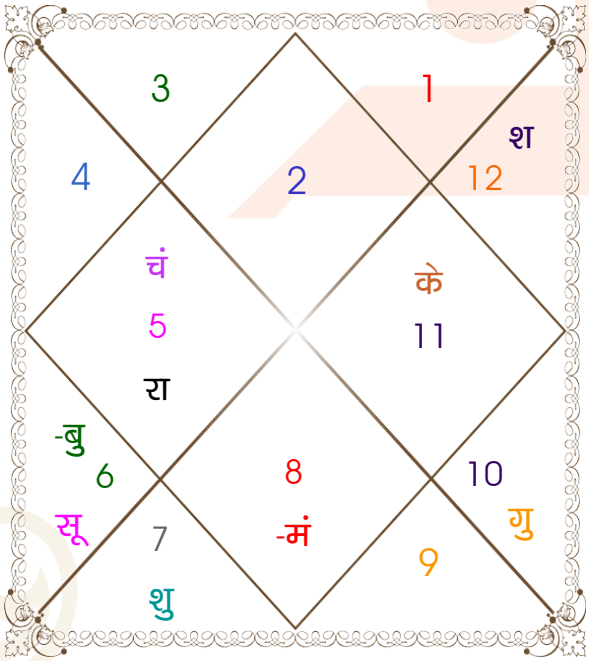

लग्न-चलित

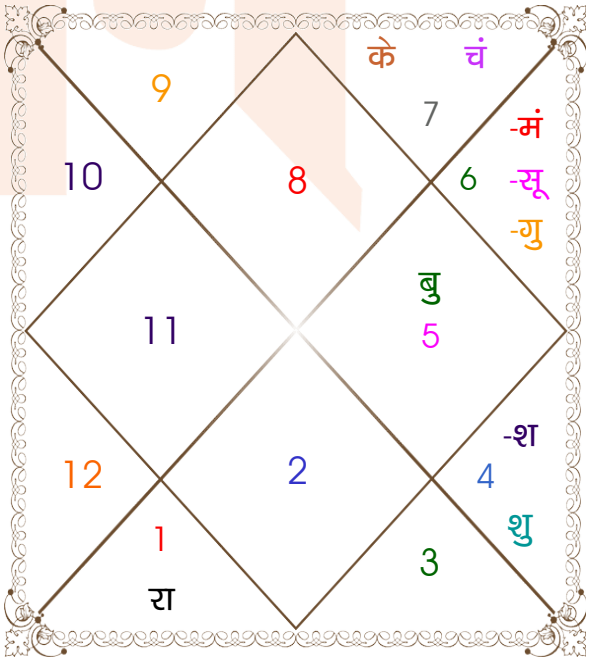

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र
लाइन तलाव रांची झारखंड
9835195382
9835195382

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	वनचर	मानव	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	साधक	प्रत्यारि	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मूषक	महिष	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	सूर्य	शुक्र	5	0.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	देव	6	5.00	--	सामाजिकता
भकूट	सिंह	तुला	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	24.50		

कुल : **24.5 / 36**

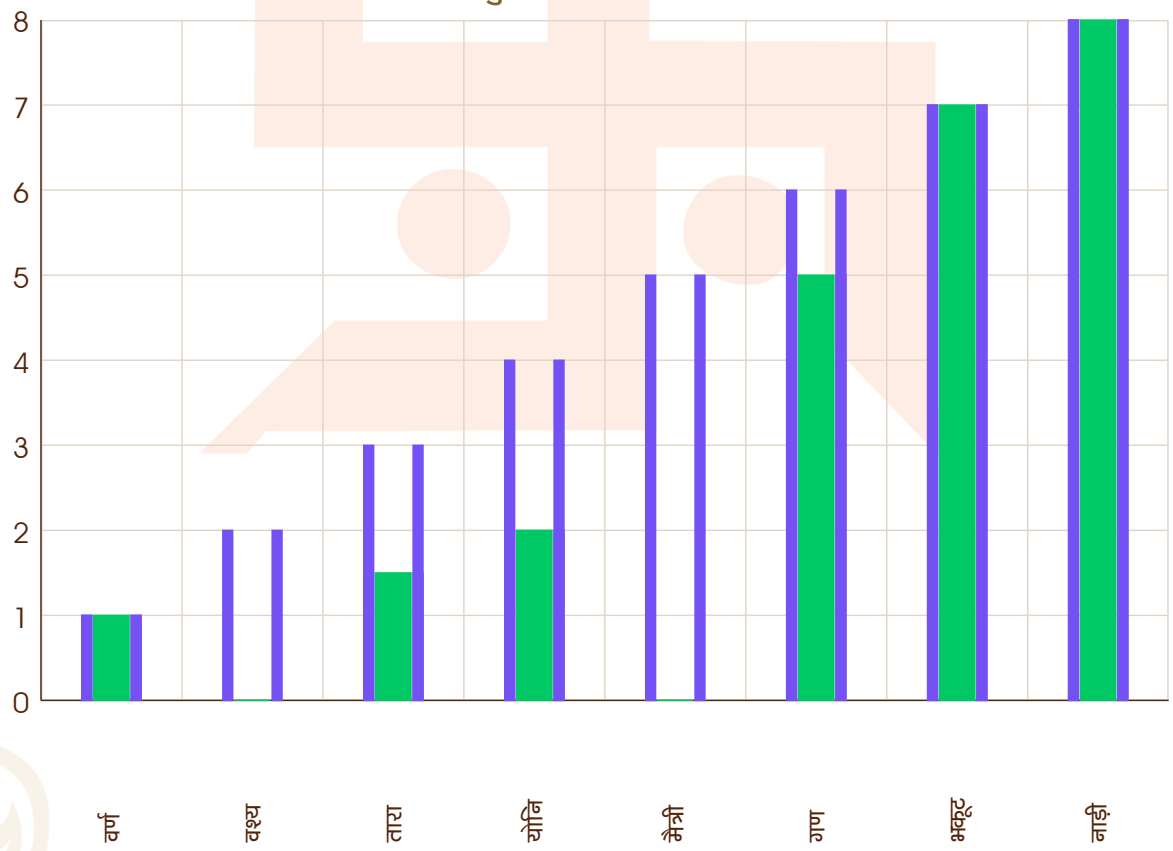

ज्योतिष ग्रह रत्न् केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र
लाइन तलाव रांची झारखंड
9835195382
9835195382

अष्टकूट मिलान

डतण्ै वदन ानउंत का वर्ग श्वान है तथा डेणीनेीप का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण्ै वदन ानउंत और डेणीनेीप का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण्ै वदन ानउंत मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

ढप्ध्;डडम्गंवूदक्मइ;0द्धत्र।द्धझ क्योंकि मंगल डतण्ै वदन ानउंत कि कुण्डली में उच्च का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेणीनेीप मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु डेणीनेीप कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण्ै वदन ानउंत तथा डेणीनेीप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

डतण्ैवदन ानउंत का वर्ण क्षत्रिय तथा डेणीनेंीप का वर्ण शूद्र है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके प्रभाव से डेणीनेंीप वैश्विक मां की भूमिका अदा करने वाली होगी तथा सभी की देखभाल तथा सेवा बिना थके, बिना शिकायत किये करती रहेगी। साथ ही परिवार के किसी भी सदस्य अथवा डतण्ैवदन ानउंत से कभी तर्क-वितर्क नहीं करेगी। अपने इसी आतिथ्य भाव के कारण सभी की प्रशंसा का पात्र बनेगी।

वश्य

डतण्ैवदन ानउंत का वश्य वनचर है एवं डेणीनेंीप का वश्य द्विपद (मनुष्य) है। जिसके कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। वनचर मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु होता है तथा जब भी मौका मिलता है वनचर मनुष्य पर आक्रमण कर उसे मारकर खा जाता है। इसी प्रकार वैवाहिक संबंधों में भी दोनों एक-दूसरे के लिए शत्रु साबित होंगे। डतण्ैवदन ानउंत और डेणीनेंीप के के बीच अक्सर आरोप-प्रत्यारोप का दौर चलता रहेगा। दोनों समय समय पर एक दूसरे का अपमान करते रहेंगे। एक दूसरे की परवाह भी कम ही करेंगे। दोनों अक्सर लड़ाई-झगड़ा, एक-दूसरे पर वार एवं अपमान करते रहेंगे। जिससे परिवार की सुख-शांति भंग हो सकती है। ऐसी स्थिति में संतान भी अति क्रोधी, असामाजिक एवं अमानवीय व्यवहार करने वाले हो सकती है।

तारा

डतण्ैवदन ानउंत की तारा साधक तथा डेणीनेंीप की तारा प्रत्यरि है। डेणीनेंीप की तारा प्रत्यरि होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। संभाव है कि यह विवाह डतण्ैवदन ानउंत एवं उसके परिवार के लिए हानिकारक साबित हो। डेणीनेंीप का स्वभाव बिल्कुल लापरवाह, स्वार्थी एवं असहयोग की भावना वाली हो सकती है तथा भविष्य मे अपने स्वार्थ की पूर्ति करने में ही लगी रह सकती है। साथ ही डेणीनेंीप के अवैध संबंध तक भी हो सकते हैं जिसके फलस्वरूप पति, बच्चों एवं संपूर्ण परिवार को काफी कष्ट एवं पीड़ा का सामना कर पड़ सकता है। डतण्ैवदन ानउंत अत्यधिक आध्यात्मिक हो सकता है तथा अपना अधिकांश समय आध्यात्मिक गतिविधियों में ही व्यतीत करता रहेगा।

योनि

डतण्ैवदन ानउंत की योनि मूषक है तथा डेणीनेंीप की योनि महिष है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से

देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या कन्या में से कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में डतण्ैवदन ानउंत एवं डेणीनेीप दोनों के राशि स्वामी परस्पर शत्रु हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अत्यधिक बुरा मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि में यदि दोनों के राशि स्वामी परस्पर शत्रु हों तो इसे अत्यधिक बुरा मिलान माना जाता है। जिसके कारण डतण्ैवदन ानउंत एवं डेणीनेीप के बीच किसी प्रकार का प्रेम नहीं रहेगा तथा दोनों में काफी वैचारिक भिन्नता, तनाव, झगड़ा, मुकदमेबाजी यहां तक कि तलाक आदि की स्थिति भी बन सकती है। परिवार में शांति एवं सौहार्दता के अनुपस्थित रहने के कारण घर में हमेशा पैसे का अभाव बना रह सकता है तथा अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी डतण्ैवदन ानउंत दवं डेणीनेीप को काफी संघर्ष करना पड़ सकता है। इनके बच्चे अयोग्य, बात नहीं सुनने वाले तथा जीवन में काफी हद तक असफल होते हैं।

गण

डतण्ैवदन ानउंत का गण मनुष्य तथा डेणीनेीप का गण देव है। अतः यह मिलान उत्तम मिलान है। ऐसे मिलान में डेणीनेीप सतोगुणी होंगी तथा उसका स्वभाव दयालु, मृदु, सौम्य तथा कोमल होगा है जो कि एक महिला का नैसर्गिक गुण है तथा अन्य सभी लोग भी इन्हीं गुणों की अपेक्षा करेंगे। जबकि दूसरी ओर डतण्ैवदन ानउंत व्यावहारिक, मिलनसार, परिश्रमी, बुद्धिमान तथा महत्वाकांक्षी होंगे। जोकि इस भौतिकवादी, विश्व के पुरुष का नैसर्गिक गुण होता है। इन गुणों एवं योग्यताओं के कारण डतण्ैवदन ानउंत अपनी पत्नी, बच्चों, परिवार एवं समाज की हर अपेक्षा को पूरा करने में सक्षम रहेंगे तथा सभी इनसे खुश भी रहेंगे।

भकूट

डतण्ैवदन ानउंत से डेणीनेीप की राशि तृतीय भाव में स्थित है तथा डेणीनेीप से डतण्ैवदन ानउंत की राशि एकादश भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण डतण्ैवदन ानउंत अति महत्वाकांक्षी, परिश्रमी, बुद्धिमान तथा अच्छा कमाने वाले होंगे। दूसरी ओर डेणीनेीप सद्गुणी, परिश्रमी, सहयोगी एवं दयालु होंगी तथा अपने पति की हर क्षेत्र में हर संभव सहायता करेंगी। दोनों के बीच मधुर तालमेल, एक-दूसरे की अच्छी समझ होगी। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे दोनों एक-दूसरे के लिए ही बने हों।

नाड़ी

डतण्ैवदन ानउंत की नाड़ी मध्य है तथा डेणीनेीप की नाड़ी अन्त्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह जीवन के लिए आवश्यक दो महत्वपूर्ण अवयवों का समन्वय है। अच्छे स्वास्थ्य, स्वस्थ काया एवं अच्छे यौन जीवन के लिए वात, पित्त एवं कफ का शरीर में संतुलन आवश्यक है। जिसके कारण डतण्ैवदन ानउंत एवं डेणीनेीप के बीच साहचर्य, सुख एवं समृद्धि की वृद्धि तथा उन्हें अच्छे, स्वस्थ एवं आज्ञाकारी संतान प्रदान होगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

डतण ैवदन ानउंत की जन्म राशि अग्नितत्व युक्त सिंह तथा डेणीनेीप की वायुतत्व युक्त तुला राशि है। नैसर्गिक रूप से अग्नि एवं वायुतत्व में समानता पाई जाती है। अतः डतण ैवदन ानउंत और डेणीनेीप के मध्य स्वाभाविक समानताएं रहेगी परन्तु समय समय पर मतभेद एवं विवाद भी उत्पन्न होंगे। अतः मिलान मध्यम रहेगा।

डतण ैवदन ानउंत की राशि का स्वामी सूर्य तथा डेणीनेीप की राशि का स्वामी शुक्र परस्पर शत्रुभाव में पड़ते है। अतः इसके प्रभाव से डतण ैवदन ानउंत और डेणीनेीप के मध्य परस्पर विरोध एवं वैमनस्य का भाव रहेगा। साथ ही परस्पर एक दूसरे के गुणों की उपेक्षा करेंगे तथा कमियों पर विशेष ध्यान देंगे फलतः परस्पर संबधों में कटुता तथा तनाव रहेगा एवं एक दूसरे के प्रति सहयोग एवं सहानुभूति के भाव की भी न्यूनता रहेगी। इसके अतिरिक्त डतण ैवदन ानउंत की तेजस्वी प्रवृति से भी यदा कदा अशांति उत्पन्न होगी।

डतण ैवदन ानउंत और डेणीनेीप की राशि परस्पर तृतीय एवं एकादश भाव में पड़ती है। यह शास्त्रानुसार शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से उपरोक्त अशुभ फलों में न्यूनता होगी तथा यत्नपूर्वक परस्पर सामंजस्य स्थापित करके एक दूसरे को सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए उद्यत रहेंगे। साथ ही एक दूसरे के प्रति आकर्षण स्नेह एवं समर्पण के भाव में भी वृद्धि होगी। डतण ैवदन ानउंत और डेणीनेीप की आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन में सफल रहेंगे।

डतण ैवदन ानउंत का वश्य वनचर तथा डेणीनेीप का वश्य मानव है। वनचर एवं मानव में नैसर्गिक शत्रुता एवं विषमता विद्यमान रहती है अतः डतण ैवदन ानउंत और डेणीनेीप की अभिरूचियों में विषमता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर आवश्यकताएं असमान रहेंगी फलतः दाम्पत्य संबधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखने में असमर्थ होंगे।

डतण ैवदन ानउंत का वर्ण क्षत्रिय तथा डेणीनेीप का वर्ण शूद्र है। अतः डतण ैवदन ानउंत पराक्रमी एवं साहसी कार्यो को करने में प्रवृत रहेंगे। डेणीनेीप की प्रवृति किसी भी कार्य को बिना किसी वरीयता के परिश्रम एवं ईमानदारी से सम्पन्न करेंगी । फलतः कार्य क्षेत्र में उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे ।

धन

डतण ैवदन ानउंत और डेणीनेीप की तारा एक दूसरे के लिए सम रहेगी। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य रूप से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों समर्थ होंगे। डतण ैवदन ानउंत और डेणीनेीप की राशि तृतीय एवं एकादश भाव में पड़ती है। यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से उनकी आय में नित्य वृद्धि होगी जिससे अर्थिक सुदृढ़ता बनी रहेगी। साथ ही मंगल का प्रभाव भी सम रहेगा।

अतः धनार्जन होता रहेगा।

डेणीनेंप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी अतः उन्हें अचानक धन प्राप्ति की पूर्ण संभावना होगी। यह लाटरी या सट्टे या किसी अन्य माध्यम से हो सकता है। साथ ही पैतृक सम्पति या जायदाद भी उनको मिलेगी जिससे दम्पति धन एवं ऐश्वर्य से युक्त रहकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

स्वास्थ्य

डतण्ैवदन ानउंत मध्य नाड़ी तथा डेणीनेंप अन्त्य नाड़ी में उत्पन्न हुई है। अतः दोनों की नाड़ी अलग अलग होने के कारण इन पर नाड़ी दोष का प्रभाव नहीं होगा फलतः शारीरिक रूप से दोनों सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगे परन्तु डेणीनेंप के स्वास्थ्य पर मंगल का अशुभ प्रभाव होगा जिससे वे रक्त या पित संबंधी परेशानी प्राप्त करेंगी तथा यदा कदा हृदय संबंधी कष्ट भी हो सकता है। साथ ही गुप्त रोग या मासिक धर्म संबंधी असुविधा भी समय समय पर होती रहेगी। डेणीनेंप सुख के क्षणों में भी यदा कदा उदासीनता के भाव का प्रदर्शन करेंगी जिससे परस्पर संबंधों में तनाव का भाव विद्यमान होगा। अतः मंगल के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए डेणीनेंप को नियमित रूप से हनुमानजी की पूजा करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास भी सम्पन्न करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से डतण्ैवदन ानउंत और डेणीनेंप का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त डतण्ैवदन ानउंत और डेणीनेंप के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में डेणीनेंप के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन डेणीनेंप को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में डेणीनेंप को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से डतण्ैवदन ानउंत और डेणीनेंप सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार डतण्ैवदन ानउंत और डेणीनेंप का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

डेणीनेंीप के अपनी ससुराल के लोगों से संबधों में वांछित मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा सास से कुछ मतभेद रहेगा जिससे उनके साथ सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा तथापि यदि डेणीनेंीप धैर्य एवं बुद्धिमता से कार्य लें तो सास की सहानुभूति प्राप्त हो सकती है।

ससुर देवर एवं ननदों से डेणीनेंीप के संबध मधुर रहेंगे तथा उनसे वांछित स्नेह एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। ससुर की सुख सविधा एवं आराम का वह पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा वे भी उसकी सेवा भावना से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवर एवं ननद से भी डेणीनेंीप का व्यवहार मित्रता पूर्ण रहेगा तथा वे भी डेणीनेंीप से प्रसन्न रहेंगे। इस प्रकार वह ससुराल के लोगों से सामंजस्य स्थापित करके आनंदानुभूति प्राप्त करेंगी।

ससुराल-श्री

डतण्ैवदन ानउंत के अपनी सास से संबधों में मधुरता रहेगी तथा सास को वह अपनी माता के समान पूर्ण आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। वह उन्हें अपने पुत्र के समान समझेंगी तथा उसी प्रकार अपनत्व तथा वात्सल्य प्रदान करेंगी। साथ ही समय समय पर वे सपत्नीक सास से मिलने के लिए ससुराल जाते रहेंगे।

लेकिन ससुर के साथ में डतण्ैवदन ानउंत के संबध अच्छे नहीं रहेंगे। इनकी आयु में अधिक अंतर के कारण वैचारिक तथा सैद्धांतिक मतभेद समय समय पर उत्पन्न होते रहेंगे। लेकिन यदि दोनों सामंजस्य की प्रवृति से कार्य लें तो मतभेदों में न्यूनता आएगी तथा मधुर संबधों में वृद्धि होगी। साथ ही साले एवं सालियों से भी संबधों में तनाव रहेगा तथा मानसिक स्तर पर विभिन्नता रहेगी जिससे एक दूसरे को वांछित सहयोग स्नेह एवं सहानुभूति अल्प ही प्रदान करेंगे। अतः इनको परस्पर सामंजस्य के भाव की स्थापना करनी चाहिए। इस प्रकार ससुराल पक्ष का दृष्टिकोण डतण्ैवदन ानउंत के प्रति सामान्य ही रहेगा।